INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATION IN ENGINEERING RESEARCH & MANAGEMENT ISSN: 2348-4918
PEER REVIEWED AND REFEREED JOURNAL IMPACT FACTOR: 3.693 (INTERNATIONAL JOURNAL)
18TH CONFERENCE (ICOSD) 2019

# संधारणीय विकास लक्ष्य हेतु पहल एवं जमीनी यथार्थता

डॉ. बिजेन्द्र प्रधान
विभागाध्यक्ष, समाज कार्य विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

**शोध सारांश** – भारत में 2030 तक सतत विकास लक्ष्य एजेडा के सभी 17 लक्ष्यों की प्राप्ति संभव है। एसडीजी इंडेक्स एण्ड डैशबोर्ड रिपोर्ट –2017 के अनुसार सतत विकास में भारत का सूचकांक 58.1 था तथा इस प्राप्तांक के आधार पर दुनिया के 157 देशों में भारत की रैंकिंग 116 वें स्थान पर है। इस प्रकार सूचकांक मूल्य एवं रैंकिंग दोनों में ही भारत पिछड़ा रहा। 2016 में भारत को प्राप्त सूचकांक 47.4 है। सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में सुधार होने से सूचकांक में 9. 7 अंकों की वृद्धि हुई है किन्तु रैंकिंग में भारत 110 वें स्थान से गिरकर 2017 में 116 वें स्थान पर आ गया है। सतत विकास में प्रथम चार स्थान पर स्कैडिनेवियन देश स्वीडन 85.2, डेनमार्क 84.2, फिनलैंड 84.0 तथा नार्वे 83.9 सूचकांक के साथ हैं। यूरोप के जर्मनी, फ्रांस और चेक गणराज्य रैंकिंग प्रथम 10 देशों में शामिल हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका सरीखे धनी देश का रैंकिंग 42 था जबकि जापान 11वें रैंक पर है। इस प्रकार सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देशों की तुलना में छोटे विकसित देश अग्रणी रहे। उभरती अर्थव्यवस्था वाले ब्रिक्स देशों में रैंकिंग में ब्राजील 56 वें, रूस 62 वें, चीन 71 वें, दक्षिण अफ्रीका 108 वें और भारत 116 वें स्थान पर हैं। रिपोर्ट के अनुसार भारतीय उपमहाद्वीप में श्रीलंका 81, भूटान 83, नेपाल 105 रैंकिंग के साथ भारत से बेहतर स्थिति में हैं। भारत से नीची रैंकिंग में पाकिस्तान 122वें, बांग्लादेश 126वें तथा अफगानिस्तान 150वें स्थान पर हैं। सतत विकास में सबसे खराब स्थिति पांच अफ्रीकी देशों – मध्य अफ्रीकी गण राज्य, चाड, कांगो जनतांत्रिक गणराज्य, लाइबीरिया, तथा मेडगास्कर की स्थिति है।

**मुख्य शब्द** : सतत विकास, विकास की स्थिति, विकास पहल, वैश्विक स्थिति।

## 1 प्रस्तावना

भारत विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में शुमार होने के बावजूद मानव विकास सूचकांक, हंगर इंडेक्स और स्वास्थ्य जैसे सूचकाकों में अन्य अल्प विकसित देशों से भी काफी नीचे पायदान पर है। प्राकृतिक और मानव संसाधन की अकूत संपदा के बावजूद गरीबी, बेरोजगारी, भूखमरी, स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में पिछड़ापन और लोगों के जीवन स्तर में सुधार के आशानुकूल जैसे संकेत ज़मीनी हकीकत में नहीं दिखने के कई सारे कारण हैं, जिन को दूर किए बिना सतत विकास लक्ष्य को पाना संभव नहीं होगा। भारत कृषि प्रधान और ग्रामीण परिवेश वाला देश है। जनसंख्या के बड़े हिस्से का रोजगार और आजीविका कृषि और इससे पैदा होने वाले रोजगार पर निर्भर है। 2011 की जनगणना के अनुसार देश की कुल जनसंख्या में 68.84 प्रतिशत लोग गांवों में निवास करते हैं। प्राकृतिक आपदाओं और भौगोलिक विविधताओं के साथ–साथ सरकारी क्षेत्र में कृषि विकास की अनदेखी से किसानों विशेषकर युवा किसानों का कृषि एवं पशुपालन से मोहभंग हुआ है। कृषि में लागत और आय में असमानता की खाई के कारण किसान खेती को वैकल्पिक आजीविका के रूप में देखने लगे हैं।

प्रदूषण दानव, पर्यावरण संकट, पारिस्थितिकी–तंत्र का विनाश, · अंधकारमय भविष्य, नगरों पर प्रदूषण गुम्बद एवं तापीय द्वीपों का विस्तार, आनुवांशिकी संकट, रेडियो धर्मिता द्वारा विनाश, कीटनाशकों का कुप्रभाव आदि अनेक भयावह शब्दों व विशेषणों से पर्यावरण संकट के प्रति सचेष्ट कर रहे हैं। यह निस्संदेह सत्य है कि विकास के साथ–साथ पर्यावरण पर प्रभाव पड़ता है किंतु इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि विकास को रोक दिया जाए। आवश्यकता इस बात की है कि विकास को सही दिशा दी जाये, उसे मानवोपयोगी बनाया जाये तथा उसका पर्यावरण पर कुप्रभाव न हो। यह कार्य संपूर्ण विश्व को सामूहिक रूप से करना है, इसमें वैज्ञानिकों, शोधकर्त्ताओं के साथ–साथ प्रशासकों एवं सामान्य जनता को भी योग देना है। यह कार्य क्षेत्रीय अथवा राष्ट्रीय सीमाओं से अलग रह कर विश्व स्तर पर करना आवश्यक है तभी विकास की सार्थकता है।

विकास की सही दिशा है **'संधृत अथवा पोषणीय विकास'** और यह कार्य विकास में पारिस्थितिकी दृष्टिकोण द्वारा किया जा सकता है। पारिस्थितिकीय जीवन धारण करने योग्य विकास से तात्पर्य वह विकास है जो मानव जीवन की उत्तमता को बिना पर्यावरण को हानि पहुँचाये बनाये रखे। यह विकास होगा पर्यावरण के साथ सामंजस्य करके या उन तकनीकों का विकास करके जिनसे पर्यावरण–हानि को रोका जा सके। इसके लिये पारिस्थितिकी के साथ आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक तथ्यों का भी समन्वय करना होगा। 4 अरब प्राणियों ने अब तक 30 हजार पौधों की प्रजातियाँ और लगभग 200 पक्षी एवं जंतुओं की प्रजातियाँ नष्ट कर दी हैं और लगभग 1000 नष्ट होने का खतरा झेल रही हैं। दूसरी ओर मानव जनसंख्या निरंतर बढ़ रही है और खाने–पीने की खपत 10 गुना अधिक हो गई है। पृथ्वी की उर्वरक परत गहन खेती के कारण पतली हो रही है। भवनों के निर्माण, भू–क्षरण एवं मरुस्थलों का विस्तार हो रहा है। यह सब आत्मघातक होगा। इसके लिये प्रकृति की पारस्परिक क्रियाओं को समझना होगा क्योंकि उनके मध्य एक सार्वभौमिक एकता होती है।

## 2 अध्ययन का उद्देश्य

(1) सतत विकास लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किये जा रहे प्रयासों का अध्ययन करना।

(2) सतत विकास लक्ष्य प्राप्ति में देश की सहभागिता का अध्ययन करना।
(3) सरकारी नीतियों की भूमिका का अवलोकन करना।

## 3 विधि तंत्र

संधारणीय विकास के लिए उनको संयुक्त राष्ट्र द्वारा बनाया गया है और वैश्विक लक्ष्यों के समान प्रचारित किया गया है। 2015 के अंत में सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों के निरस्त हो जाने पर ये उनको प्रतिस्थापित कर रहे हैं। यह लक्ष्य 2015 से 2030 तक चलेगा। उन लक्ष्यों के लिए 17 लक्ष्य और 169 विशिष्ट लक्ष्य हैं। अध्ययन के लिए शासन द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं को की क्रियान्वयन की प्रक्रिया का अवलोकन करके उनके यथा स्थिति को स्पष्ट किया गया है।

## 4 शोध प्राविधि

प्रस्तुत शोध गुणात्मक सह विवरणात्मक प्राविधि का है स शोध अध्ययन के लिए विभिन्न प्रकार के समंकों को संकलित करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक पद्धति का उपयोग किया गया है।

## 5 समंकों का स्रोत

प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक समंकों पर आधारित है। जिसका संकलन विकास विभाग की रिपोर्ट, वन विभाग की रिपोर्ट,शासन द्वारा किये जा रहे विभिन्न नीतिओं के क्रियान्वयन अवलोकन की नीतियों का अवलोकन किया गया है।

## 6 सतत विकास

सतत विकास से हमारा अभिप्राय ऐसे विकास से है, जो हमारी भावी पीढ़ियों की अपनी जरूरतें पूरी करने की योग्यता को प्रभावित किए बिना वर्तमान समय की आवश्यकताएं पूरी करे। भारतीयों के लिए पर्यावरण संरक्षण, जो सतत विकास का अनिन्न अंग है, कोई नई अवधारणा नहीं है। भारत में प्रकृति और वन्यजीवों का संरक्षण अगाध आस्था की बात है, जो हमारे दैनिक जीवन में प्रतिबिंबित होता है और पौराणिक गाथाओं, लोककथाओं, धर्मों, कलाओं और संस्कृति में वर्णित है।

## 7 सतत विकास सम्बन्धी अवधारणा

**भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी**, जी द्वारा कहा गया कि "एजेंडा 2030 के पीछे की हमारी सोच जितनी ऊँची है हमारे लक्ष्यद भी उतने ही समग्र हैं। इनमें उन समस्याओं को प्राथमिकता दी गई है, जो पिछले कई दशकों से अनसुलझी हैं और इन लक्ष्यों से हमारे जीवन को निर्धारित करने वाले सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय पहलुओं के बारे में हमारे विकसित होती समझ की झलक मिलती है। मानवता के 1/6 हिस्सों के सतत विकास का विश्व और हमारे सुंदर पृथ्वी के लिए बहुत गहरा असर होगा।"

**संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस, जो ने सतत विकास लक्ष्य के बारे में बताया कि** "2015 में अनुमोदित 2030 एजेंडा और उसके 17 सतत् विकास लक्ष्यम इन चुनौतियों और इनके अंतरसंबंधों के समाधान के लिए संपूर्ण और सामंजस्यरपूर्ण फ्रेमवर्क प्रदान करते हैं। इनके अंतर्गत सदस्य राष्ट्रों को सतत विकास के सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय पहलुओं का समाधान संतुलित ढंग से करना होगा। इन पर अमल करते हुए समावेशन और एकीकरण तथा किसी को पीछे छूटने न देने के सिद्धांतों का पालन अनिवार्य है।"

**जॉन वी. लिण्डसे ने लिखा है–** "Technology Produces the Crisis and Technology can End it" किंतु यह कार्य तकनीकी स्वतः नहीं करेगी, इसके लिये हमें उसे नई दिशा देनी होगी, अनुसंधानों में लगना होगा और प्रत्येक नई विकास तकनीक के साथ ही उन साधनों को भी खोजना होगा जो इसके कुप्रभावों को रोक सकें ।

**प्रो.** वेस्टर के अनुसार संसार का भविष्य एक प्रकार से साइबरनैटिक विज्ञान को ठीक प्रकार से समझने पर आधारित है। ऊर्जा के पुनः इस्तेमाल से ऊर्जा समस्या कम हो सकती है। वृहत उद्योगों के स्थान पर अधिक संख्या में छोटी इकाइयाँ लगाने से ऊर्जा की बचत एवं प्रदूषण का खतरा कम हो जाता है। दोष वर्तमान तकनीक का नहीं अपितु उसके गलत उपयोग का है। उस तकनीक का विकास होना चाहिए जिसे जीव–विज्ञान दर्शाता है अर्थात् कम से कम स्थान, ऊर्जा एवं भौतिक सामग्री की आवश्यकता हो। ऐसी तकनीक अपनाई जाये तो प्रकृति के विरुद्ध न हो, जिससे पर्यावरण प्रदूषण कम से कम हो तथा जो न केवल मनुष्यों अपितु संपूर्ण जीव–जगत के लिये लाभकारी हो।

**'ट्रांस्फॉर्मिंग आवर वर्ल्ड द 2030 एजेंडा फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट'** के संकल्प को, जिसे सतत विकास लक्ष्यों के नाम से भी जाना जाता है, भारत सहित 193 देशों ने सितंबर, 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा की उच्च स्तरीय पूर्ण बैठक में स्वीकार किया गया था और इसे एक जनवरी, 2016 को लागू किया गया। सतत विकास लक्ष्यों का उद्देश्य सबके लिए समान, न्यायसंगत, सुरक्षित, शांतिपूर्ण, समृद्ध और रहने योग्य विश्व का निर्माण करना और विकास के तीनों पहलुओं, अर्थात सामाजिक समावेश, आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण को व्यापक रूप से समाविष्ट करना है। सहस्राब्दी विकास लक्ष्य के बाद, जो 2000 से 2015 तक के लिए निर्धारित किए गए थे, विकसित इन नए लक्ष्यों का उद्देश्य विकास के अधूरे कार्य को पूरा करना और ऐसे विश्व की संकल्पना को मूर्त रूप देना है, जिसमें कम चुनौतियां और अधिक आशाएं हों।

**केन्द्रीय मानव विकास संसाधन मंत्री श्री प्रकाश** जावड़ेकर ने नेहरु मेमोरियल लाइब्रेरी और रिसपेक्ट इंडिया द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर स्मृति व्याख्यान **"सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा"** विषय था। सतत खुशहाली केवल नवाचार से ही आ सकती है। देश के प्रतिभाशाली युवा इसको बढ़ावा दे सकें इसके लिये सरकार ने केंद्रीय विश्वविद्यालयों में सबसे अच्छी शोध प्रयोगशालाएँ स्थापित करने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि **'प्रतिभा पलायन'** की समस्या के समाधान हेतु अनुसंधानों और नवाचार को

प्रोत्साहित करने तथा प्राथमिक शिक्षा से उच्च शिक्षा तक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना जरुरी है। भारत और चीन ने अभियांत्रिकी के कारण पिछले 30 वर्षों में प्रगति हासिल की है तथा कम पारिश्रमिक के कारण ये दोनों देश मूल्य प्रतिस्पर्धी भी बन गए हैं। परंतु यह खुशहाली सतत अथवा धारणीय नहीं है। सतत खुशहाली केवल नवाचार से ही आ सकती है। विद्यालयों के माध्यम से भी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने की आवश्यकता पर बल दिया तथा उन शिविरों की और संकेत किया जिन्हें इस माह पाँच स्थानों रायपुर, बेंगलुरु, चंडीगढ़, गुवाहाटी और पुणे में स्थापित किया जाएगा। बच्चों को अच्छी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने से अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे।

**एनसीपी से राज्य सभा सांसद डी.पी.त्रिपाठी** अपने वक्तव्य में कहा कि दिनकर एक काल जयी कवि ही नहीं, आजादी के बाद सभ्यता और संस्कृति मूलक विमर्श के प्रस्तावक रहे है।

**सिक्किम के भूतपूर्व राज्यपाल श्री वी.पी.सिंह** ने कहा कि दिनकर सामाजिक कर्तव्यों को अपने लेखन से ऊपर रखा ,इस अर्थ में भी वे प्रासांगिक हैं।

**हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने कहा है**– "हमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग के माध्यम से पानी, ऊर्जा, निवास स्थान, कचरा प्रबन्धन एवं पर्यावरण के क्षेत्रों में पृथ्वी द्वारा झेली जाने वाली समस्याओं को दूर करने के लिए कार्य करना होगा।"

**रिजर्व बैंक के गवर्नर श्री रघुराम राजन का कहना है**– "हमें यह निश्चित करके चलना चाहिए कि पूरे विश्व में वृद्धि के वास्तविक एवं सतत स्रोत हो।"

**हमारे पूर्व प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री का कहना था**– "हमें देश के संसाधनों का प्रयोग मानवता के लाभ के लिए करना चाहिए ।"

**संधारणीय विकास लक्ष्य हेतु पहल**

**पृथ्वी सम्मेलन** – यह सम्मेलन ब्राजील के रियो डी जनेरियो शहर में 1992 में हुआ था। ठीक इसके 20 वर्ष बाद रियो में ही 2012 में RIO+20 के नाम से सम्मेलन हुआ जहां यह तय हुआ कि क्योटो प्रोटोकॉल को 2020 तक ही जारी रखेंगे और 2020 के बाद क्या करना है, यह 2015 के पेरिस सम्मेलन में सभी देशो को तय करके रखना है।

**'पृथ्वी–2' सम्मेलन** 26 अगस्त से 4 सितम्बर, 2002 तक 'पृथ्वी–2' सम्मेलन जोहान्सबर्ग में आयोजित किया गया। इसमें पूर्व घोषणा–पत्र में वर्णित नीतियों के साथ जलवायु परिवर्तन, वनों का विनाश, जल संकट, ऊर्जा सकट, गरीबी हटने आदि अनेक मुद्दों पर विचार–विनिमय कर साझा कार्यक्रम तक किए गए।

**संधारणीय विकास लक्ष्य** (SDG) भविष्य के अंतर्राष्ट्रीय विकास संबंधित लक्ष्यों का सेट हैं। संधारणीय विकास के लिए उनको संयुक्त राष्ट्र द्वारा बनाया गया है और वैश्विक लक्ष्यों के समान प्रचारित किया गया है। 2015 के अंत में सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों के निरस्त हो जाने पर ये उनको प्रतिस्थापित कर रहे हैं। यह लक्ष्य 2015 से 2030 तक चलेगा। उन लक्ष्यों के लिए 17 लक्ष्य और 169 विशिष्ट लक्ष्य हैं।

**सहस्राब्दी विकास लक्ष्य** (मिलेनियम डेवलपमेंट गोल/MDG)– सन 2000 में संयुक्त राष्ट्रसंघ के जनरल असेंबली की बैठक हुई। वहां उन्होंने सहस्राब्दी विकास लक्ष्य का प्रस्ताव पारित किया। इन लक्ष्यों को 2015 तक प्राप्त कर लेना था। इसमें 8 लक्ष्य थे तथा **'एसोसिएटेड टारगेट'** की संख्या 18 थी।

**8 संधारणीय विकास लक्ष्य**

**इकनोमिक सर्वे के अनुसार** SDG में 17 गोल और 169 एसोसिएटेड टारगेट हैं जिनको पूरा करने के लिए काफी रकम की आवश्यकता होगी। अतः 2030 तक सभी लक्ष्य पूरे हो जाएं ऐसा संभव नहीं है। इसलिए हम प्राथमिकता के आधार पर लक्ष्यों को पूरा करेंगे। अगस्त 2015 में 193 देश निम्नलिखित 17 लक्ष्यों पर सहमत हो गये–

(1) पूरे विश्व से गरीबी के सभी रूपों की समाप्ति।
(2) भूख की समाप्ति, खाद्य सुरक्षा और बेहतर पोषण और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा।
(3) सभी आयु के लोगों में स्वास्थ्य सुरक्षा और स्वस्थ जीवन को बढ़ावा।
(4) समावेशी और न्यायसंगत गुणवत्ता युक्त शिक्षा सुनिश्चित करने के साथ ही सभी को सीखने का अवसर देना।
(5) लैंगिक समानता प्राप्त करने के साथ ही महिलाओं और लड़कियों को सशक्त करना।
(6) सभी के लिए स्वच्छता और पानी के सतत प्रबंधन की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
(7) सस्ती, विश्वसनीय, टिकाऊ और आधुनिक ऊर्जा तक पहुंच सुनिश्चित करना।
(8) सभी के लिए निरंतर समावेशी और सतत आर्थिक विकास, पूर्ण और उत्पादक रोजगार, और बेहतर कार्य को बढ़ावा देना।
(9) लचीले बुनियादी ढांचे, समावेशी और सतत औद्योगीकरण को बढ़ावा।
(10) देशों के बीच और भीतर असमानता को कम करना।
(11) सुरक्षित, लचीले और टिकाऊ शहर और मानव बस्तियों का निर्माण।
(12) स्थायी खपत और उत्पादन पैटर्न को सुनिश्चित करना।
(13) जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभावों से निपटने के लिए तत्काल कार्रवाई करना।
(14) स्थायी सतत विकास के लिए महासागरों, समुद्र और समुद्री संसाधनों का संरक्षण और उपयोग।
(15) सतत उपयोग को बढ़ावा देने वाले स्थलीय पारिस्थितिकीय प्रणालियों, सुरक्षित जंगलों, भूमि क्षरण और जैव विविधता के बढ़ते नुकसान को रोकने का प्रयास करना।
(16) सतत विकास के लिए शांतिपूर्ण और समावेशी समितियों को बढ़ावा देने के साथ ही सभी स्तरों पर इन्हें प्रभावी, जवाबदेह बनना ताकि सभी के लिए न्याय सुनिश्चित हो सके।

(17) सतत विकास के लिए वैश्विक भागीदारी को पुनर्जीवित करने के अतिरिक्ति कार्यान्वयन के साधनों को मजबूत बनाना।

**सतत विकास लक्ष्य के तहत सबसे बेहतर स्थिति वाले 5 देश**

| रैंक | देश | स्कोर 2016 | स्कोर 2017 |
|---|---|---|---|
| 1 | स्वीडन | 84.5 | 85.6 |
| 2 | डेनमार्क | 83.9 | 84.2 |
| 3 | नार्वे | 82.3 | 83.9 |
| 4 | फिनलैंड | 81.0 | 84 |
| 5 | चेक रिपब्लिक | 76.7 | 81.9 |

**सतत विकास लक्ष्य के तहत सबसे निम्न स्तर वाले 5 देश**

| रैंक | देश | स्कोर 2016 | स्कोर 2017 |
|---|---|---|---|
| 157 | मध्य अफ्रीकी गणराज्य | 149 | 36.7 |
| 156 | चाड | 145 | 41.5 |
| 155 | कांगो प्रजातान्त्रिक गणराज्य | 147 | 42.7 |
| 154 | लाइबेरिया | 148 | 42.8 |
| 153 | मेडागास्कर | 140 | 43.5 |

### ➢ सतत विकास के मौलिक तत्व

सतत विकास का आधार पारिस्थितिकी के साथ आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक भी है। विकास में सतत विकास की आवश्यकता का प्रमुख कारण संसाधनों का अतिशय दोहन तथा तकनीकी ज्ञान का दुरूपयोग है। सतत विकास हेतु अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है, वे हैं–जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता, खतरनाक पदार्थों का निस्तारण, प्रदूषित करने वाले अपशिष्टों का निस्तारण, खाद्य एवं पारिस्थितिक सुरक्षा।

### ➢ सतत विकास के सूचकांक

सतत विकासात्मकता एक ऐसा पहलू है जिसका सम्बन्ध एक ओर प्राकृतिक पर्यावरण से है तो दूसरी ओर सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक तथ्यों से, इसी कारण इसका किसी एक सूचकांक से मापन नहीं किया जा सकता। इसके निर्धारण हेतु पारिस्थितिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सूचकांकों को आधार बनाया जाता है। पारिस्थितिक सूचकांक में वनस्पति, मृदा उत्पादकता, भूमि उपयोग, जल की मात्रा एवं गुणवता, जैविक मात्रा एवं गुणवत्ता के साथ–साथ ऊर्जा प्रबन्धन को सम्मिलित किया जाता है। सामाजिक सूचकांकों में स्वास्थ्य, पोषण, खाद्य उपलब्धता, शैक्षिक स्तर आदि प्रमुख हैं। यद्यपि सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का मापन कठिन होता है।

### ➢ पर्यावरणीय मुद्दे एवं सतत विकास

वर्तमान में वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी विकास के साथ कृषि, सिंचाई, खनन, उद्योग, परिवहन, वनरोपण, भूमि प्रबन्धन आदि अनेक क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति हुई है। इस प्रगति में पर्यावरण की निरंन्तर हानि होती गई और वह इस अवस्था में पहुँच गया कि अब सभी यह विचार करने को बाध्य हैं कि किस प्रकार विकास के साथ पर्यावरण संरक्षित रहे। इसी कारण अनेक विधियों–प्रयोगों से विनाश रहित विकास की तकनीकी का विकास किया जा रहा है और उन्हें अधिक से अधिक प्रयोग में लाने को प्रेरित किया जा रहा है।

### ➢ सतत विकास की वर्तमान युग में महत्व

सतत अथवा संधृत विकास वर्तमान युग की आवश्यकता है क्योंकि मानव जाति का न केवल वर्तमान अपितु भविष्य भी इस पर निर्भर करता है। जिस प्रकार से अनेक क्रान्तियाँ जैसे कृषि, औद्योगिक, परिवहन आदि हुई हैं, इसी प्रकार अब समय आ गया है कि **'विनाश रहित विकास'** के लिए भी क्रान्ति हो।

### 9 निष्कर्ष एवं एवं सुझाव

जिस तरह से विश्व की जनसंख्या बढ़ रही है, उससे यह अनुमान लगाया जा रहा है कि वर्ष तक यह बढ़कर 8 अरब से भी अधिक हो जाएगी और जिस तरह से प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग किया जा रहा है, उसका दुष्परिणाम यह होगा कि आने वाली मानव पीढ़ियों के लिए आवश्यक प्राकृतिक संसाधन पृथ्वी पर उपलब्ध ही नहीं होंगे।

विश्व के सभी देशों में आज विकास के पथ पर एक–दूसरे से आगे निकल जाने की होड़–सी मची है और इसके लिए औद्योगीकरण से लेकर प्राकृतिक संसाधनों के दोहन तक के हर सम्भव उपाय किए जा रहे हैं। विकास की इस होड़ में हम यह भूल गए है कि हम इसे किस मूल्य पर हासिल करना चाहते हैं। परिणाम स्वरूप विश्व की जलवायु पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा एवं प्रदूषण का स्तर इतना अधिक बढ़ गया कि यह अनेक जानलेवा बीमारियों का कारक बन गया। इसलिए बीसवीं शताब्दी में संयुक्त राष्ट्र एवं अन्य वैश्विक संगठनों ने पर्यावरण की सुरक्षा पर बल देना शुरू किया। ओजोन परत के संरक्षण के लिए वर्ष 1985 में वियना सम्मेलन हुआ एवं इसकी नीतियों को विश्व के अधिकतर देशों ने वर्ष 1988 में लागू भी किया। वर्ष 1987 में ओजोन परत मॉण्ट्रियल समझौता हुआ। आज

विश्व के 197 राष्ट्रों के साथ–साथ भारत भी इस समझौते को ईमानदारी पूर्वक निभा रहे हैं।

वर्ष 2014 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) द्वारा जारी की गई रिपोर्ट के अनुसार, परिवहन, इमारत एवं औद्योगिक क्षेत्रों में ऊर्जा दक्षता के उपाय अपनाकर प्रतिवर्ष भारत सहित अमेरिका, चीन, ब्राजील, यूरोपीय सब एवं मैक्सिको में वायु प्रदूषण से होने वाली एक लाख मौतों पर वर्ष 2030 तक रोक लगाई जा सकती है। संयुक्त राष्ट्र के जनरल असेम्बली के 69वें सत्र (2014) में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सतत विकास की पूंजी कहा गया।

**संयुक्त राष्ट्र के महासचिव बान की–मून ने कहा था–** "शिक्षा मौलिक अधिकार होने के साथ–साथ प्रत्येक राष्ट्र की समृद्धि का आधार है। माता–पिता को स्वास्थ्य एवं आहार के बारे में जानकारी होनी चाहिए यदि वे चाहते हैं कि उनके बच्चे एक अच्छी शुरूआत करें, जिसके वे अधिकारी है। उन्नत राष्ट्र कुशल एवं शिक्षित कर्मचारियों पर निर्भर रहता है। गरीबी दूर करने की चुनौतियाँ स्वीकारने एवं जलवायु परिवर्तन को रोकने तथा आने वाले दशकों में उचित सतत विकास हेतु हमें मिल–जुलकर काम करना होगा।"

अर्थशास्त्रियों, पर्यावरण विदों एवं वैज्ञानिकों ने इस समस्या का हल यह बताया है कि हम अपने विकास के लिए उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते समय इस बात का भी ध्यान रखे कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी ये संसाधन बचे रहें।

राजनीतिक और आर्थिक स्तर पर इस प्रकार की नीतियों का अनुसरण आवश्यक है ताकि पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव न हो तथा विकास का लाभ अधिकतम लोगों तक पहुँचे। सतत् विकास के लिए कानूनी एवं मौद्रिक व्यवस्था भी आवश्यक है। इसी प्रकार सामाजिक स्तर पर जनभागीदारी द्वारा पर्यावरण एवं विकास में सन्तुलन किया जाना आवश्यक है।

पर्यावरणीय स्तर पर बृहत् वनरोपण, जैविक कृषि, जैव विविधता संरक्षण, जैव कीट नियन्त्रण आदि कार्यक्रमों के साथ निरन्तर शोधकार्य होना अति आवश्यक है। सतत् विकास का उद्देश्य पारिस्थितिक तंत्र के अनुरूप विकास है जिसमें मानव कल्याण अधिकतम हो और मानव जीवन की गुणवत्ता में विकास हो।

भारत सरकार द्वारा भी इस दिशा में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं, जिनमें वनारोपण एवं सामाजिक वानिकी, मृदा संरक्षण, परती भूमि विकास, वाटर शेड प्रबन्धन, शुष्क कृषि विकास की अवधारणाएँ प्रमुख हैं।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. एन्विस सेन्टर ऑफ मध्य प्रदेश स्टेट ऑफ एनवायरमेंट होस्टेड बाए डीसास्टर मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट (डी एम आई), भोपाल स्पोंसर्ड बाए पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार।
2. ऑवर कॉमन फ्युचर (1987) वर्ल्ड कमीशन ऑन इनवायरनमेंट एन्ड डिवेलपमेंट, ऑक्सफोड प्रेस, दिल्ली।
3. स्पेशल इशु ऑन सस्टेनेबल डिवेलपमेंट,(1993) आई.जे. पी.ए., आई.आई.पी.ए., जुलाई–सितम्बर, 1993।
4. एल. गौर, (2007) एन इनकनवीनियनट टुथ द क्राईसिस ऑफ ,ग्लोबल वार्मिंग, बलुम्बरी, लंदन।।
5. डी.सी. बैरी एवं एस बास (2002) सस्टेनएबल डेवलेपमेंट स्ट्रेजितः ए रिसोर्स बुक, अर्थस्केन पब्लिकेशन, लंदन।
6. एच.ई.डाले, बियाण्ड ग्रोथ(1996) दी इकोनॉमिक्स ऑफ सस्टेनएबल डेवलेपमेंट, बीकन, बोस्टन।
7. एस. ड्रेसनर (2002) दी प्रिंसिपल्स ऑफ सस्अेनएबालेटी, अर्थस्कैन, लंदन।
8. डी. रेड, (1995) सस्टेनएबल डेवलेपमेंट एन इट्रोडक्टरी गाइड, अर्थस्कैन, लंदन।
9. तपन बिसवाल (2008) मानवाधिकार, जेंडर एवं पर्यावरण, बीवा।
10. Technical report by the Bureau of the United Nations Statistical Commission (UNSC) on the process of the development of an indicator framework for the goals and targets of the post-2015 development agenda. अभिगमन तिथि 1 मई 2015.
11. *"The Global Goals For Sustainable Development". Global Goals.* अभिगमन तिथि 2 सितम्बर 2015.
12. http://in.one.un.org/sustainable-development-goal/
13. http://mpenvis.nic.in/index1.aspx?lid=1102&mid=1&langid=2&linkid=749
14. http://www.ssgcp.com/
15. https://en.wikipedia.org/wiki/Sustainable_development
16. https://www.iisd.org/topic/sustainable-development
17. http://www.undp.org/content/undp/en/home/sustainable-development.html
18. http://www.sd-commission.org.uk/pages/what-is-sustainable-development.html
19. https://gulfnews.com/uae/dubai-achieves-most-sustainable-development-goals-1.61703829
20. https://www.sciencedirect.com/topics/earth-and-planetary sciences/sustainable-development